सुकानी

शेरदिल

कथा की ३००एम थिंकबुक

1

वर्ष था १९४२ (1942) फ्रीमैंटल के बंदरगाह पर सूरज धीरे–धीरे डूब रहा था। एक गर्मी भरे मुश्किल दिन के बाद, शाम की ठंडक से पूरे शहर को राहत मिली थी।

बंदरगाह पर खड़े स्टीमर अपना सामान रख रहे थे। यह सभी एक व्यापारी काफिले का हिस्सा थे। वे सभी कल सुबह जल्दी ही दूर की यात्राओं पर निकलने वाले थे। पर यह नौसेना के जहाज़ों के पहरे में जा रहे थे। सभी जहाज़ों पर एक खास कोड वाले झंडे लहरा रहे थे जो काफ़िले के हर जहाज़ की पदवी बता रहे थे।

घंटियाँ बजने के साथ रात का दूसरा पहरा समाप्त हुआ। बंदरगाह के ऑपरेशन की इमारत की घड़ी में छः बजे थे। वहां एक कमरे में एकत्रित हुए चालीस 'अलाइड' कप्तान एकाएक शांत हो गए। नौसेना के एक बड़े अफ़सर अंदर आये और सीधे दीवार पर टंगे हुए नक़्शे की और गए। बिना किसी देरी के उन्होंने शांत मगर चौकन्ने कप्तानों को निर्देश देने शुरू कर दिए।

काफ़िले की गति और रास्ता समझाकर, उन्होंने छड़ी से इशारा कर, कमरे में चारों ओर देखते हुए पूछा, "कोई सवाल?" सवाल और जवाब हुए और उनका अंत हुआ। सभी लोग उठे और अपने–अपने निर्देशों को सुन कर जाने लगे। कमरे में सन्नाटा था। केवल कुर्सियों की फर्श पर घिसने की आवाज़ आ रही थी।

ओंडिना के कप्तान बेंजोहरसन सबसे अंत में उठे। जैसे ही वह उठे, नौसेना के अफ़सर ने उन्हें रोका और कहा, "सुनो!" कप्तान बेंजोहरसन एकदम सावधान हो गए।

"मेरे पास तुम्हारे लिए ख़ास आदेश है! तुम काफ़िले के साथ केवल कुछ घंटों के लिए रहोगे। अपने एस्कॉर्ट कमांडर के निर्देश का इंतज़ार करो। उनके निर्देश मिलने के बाद तुम एक गोपनीय स्थान पर जाओगे। गुड लक!" फिर दोनों ने हाथ मिलाया और एक दूसरे से विदा ली।

रात का अँधेरा छटने से पहले ही पूरे काफिले ने लंगर उठाये और सागर में बढ़ चला। अट्ठारह जहाज़ एक तरफ और तेईस दूसरी ओर। इस पूरे बेड़े की रखवाली विध्वंसक जहाज़, गश्त यान, फ्रिगेट और सैनिक कर रहे थे।

फ्रीमैंटल छोड़ने के बाद कप्तान बेंजोहरसन और उनके जहाज़ ओंडिना का काफिला उत्तर की ओर मुड़ गया।

जैसे ही वे पर्थ पहुंचे, उन्होंने अपने आदेश का पालन किया और जहाज़ को ९० डिग्री के अंश पर घुमा कर पश्चिम की ओर मोड़ लिया।

८ नवंबर का दिन बिना किसी घटना के बीत गया। सभी युद्धक जहाज़ अब गति पकड़ चुके थे और पूरी निगरानी से काफ़िले के आगे–आगे चल रहे थे।

धीरे–धीरे पूरा काफ़िला एक गहरी अँधेरी रात की चादर से ढक गया। दस बजने वाले थे। जहाज़ ओंडिना पर एक अफ़सर और कैडेट दूरबीन से अपने एस्कॉर्ट जहाज़ की ओर देख रहे थे। वे किसी भी निर्देश का तुरंत पालन

करने के लिए तैयार थे। अचानक हलकी सी रोशनी हुई। एक लालटेन से कुछ संकेत मिले। एस्कॉर्ट कमांडर ने ओंडिना जहाज़ को संकेत भेजे।

उस अफ़सर के हाथ दूरबीन पर कस गए। उसने आँखों पर ज़ोर डालते हुए लालटेन को जला कर और बुझा कर दिए जा रहे संकेतों को समझा। फिर संकेत मिल जाने का इशारा कर वह सीढ़ी लगाकर नीचे उतरा और कप्तान बेंजोहरसन को पूरा संदेश सुनाया। "ओंडिना काफिले से अलग हो कर जाएगी। कोर्स ३६ रेड, गति १२ नॉट्स पर। करीब ११ बजे वह नौसेना के जहाज़ वी टी एम एस ५६ से मिलेगी। फिर उसी के निर्देशानुसार चलेगी। संदेश समाप्त। अलविदा।

गुडलक।"

2

पूरा काफिला फिर से अँधेरे की चादर से ढक गया।

ओंडिना धीरे–धीरे काफिले से अलग हो गयी। क्वार्टरमास्टर

ने जहाज़ ३६ रेड कोर्स की ओर घुमाया और उसी पर बढ़ने लगे। कप्तान बेंजोहरसन ने इंजन कक्ष में गति बढ़ाने का आदेश दिया। "रिवॉल्यूशन ८०, " का संदेश मिलते ही जहाज़ तेज़ी से आगे बढ़ने लगा। अब समय आठ बजकर बीस मिनट हो रहा था।

"चौकन्ने रहना!" अफ़सर ने पहरा देने वाले से कहा।

पर ठीक ११ : ०० बजे पहरेदार ने एक आकृति देखी। और उसी समय अँधेरे में रोशनी का एक बिंदु दिखा।

"बिंदु लकीर, बिंदु लकीर, बिंदु लकीर।" यह मोर्स कोड था यह जानने के लिए की कौनसा जहाज़, कहाँ जा रहा है? । ओंडिना ने खुद का परिचय दिया, फिर पूछा, "तुम कौन हो?"

उसी तरह के रोशनी के संकेत में जवाब आया, "वी टी एम एस ५६। उसी रास्ते(कोर्स) पर चलो, गति १२ नॉट्स।"

कप्तान बेंजोहरसन ने अपने मुख्य अफ़सर से पूछा, "न्यूटसन, वह कौन सा जहाज़ है? क्या तुम जानते हो?"

"जी, सर। मैंने उसे कमांड के आदेश में देखा था। वह भारतीय नौसेना की सुरंग हटाने वाली आर आई एन एस बंगाल है।" कुछ देर ठहर कर वह फिर बोला, यह केवल ६२० टन की है, इसमें चार छोटी बंदूकें हैं। एक ३ इंच की, एक ४० एम एम और दो २० एम एम की हैं। इसके दो अफसरों से पिछले सप्ताह पर्थ में मेरा परिचय हुआ था। इसके कमांडर, मिस्टर विल्सन युद्ध से पहले व्यापारी जहाज़ के कप्तान थे। इस पर वह इकलौते अंग्रेज़ हैं। उनके नंबर २ के अफ़सर लेफ्टिनेंट मेहरा की अभी मूछें भी नहीं आयी हैं।"

कप्तान बेंजोहरसन ने जानकारी सुनने के बाद एक सिगार निकाला। उन्होनें उसमें तम्बाकू भर कर ध्यान से उसे जलाया। देखते हुए उन्होंने एक गहरी सांस ली। न्यूटसन ने कप्तान के बिना कुछ कहे उनके भाव को समझ लिया।

अँधेरा अब और भी गहरा गया था। कप्तान बेंजोहरसन जहाज़ पर तेज़ी से टहल रहे थे। उनकी आँखें बार–बार अँधेरे में चारों ओर घूम रही थी। उनको थोड़ी घबराहट भी हो रही थी। केवल ६२० टन का एक जहाज़, जिसके कप्तान को उन्हीं की तरह युद्ध का कोई अनुभव नहीं था। लेफ्टिनेंट मेहरा भी कम उम्र के नौजवान थे। और वह उनके १५००० टन के तेल और पेट्रोल से भरे जहाज़ की सुरक्षा कैसे करेंगे! उन्होनें भगवान से अपनी रक्षा करने की प्रार्थना की।

कप्तान बेंजोहरसन ने अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए, अपने जहाज़ के ४ की बंदूकों को देखा और फिर आगे छोटे से जहाज़ बंगाल को देखा।

बंगाल पर दूरबीन लिए चौकसी करते हुए लेफ्टिनेंट मेहरा थे, और सब–लेफ्टिनेंट नागसेशन भी निगरानी पर थे। उनकी चाल रात के डरावने अँधेरे में दूसरों में हिम्मत भर रही थी।

कण्ट्रोल रूम में क्वार्टरमास्टर बुधियो जीवो जहाज़ को चला रहे थे। पेटी अफ़सर कुट्टी जहाज़ के नियंत्रण की स्थिति स्क्रीन पर देख कर बता रहे थे।

आर आई एन एस बंगाल तेज़ी से अपने मिशन पर बढ़ रही थी। ७००० टन पेट्रोल से भरी ओंडिना को उसे हज़ारों मील दूर सुरक्षित पहुँचाना था। दुश्मन एक बार शायद हथियारों से भरे जहाज़ों को छोड़ सकते थे, पर पेट्रोल और अन्य संसाधनों से भरे जहाज़ों को वह कभी नहीं जाने देंगे। पेट्रोल और तेल किसी भी देश और सेना की जीवन रेखा है।

नागसेशन ने अचानक से जहाज़ के रेलिंग को कस कर पकड़ लिया। उसी समय पहरेदार

ने आवाज़ दी, "ग्रीन २१, सर!" "सर, वहाँ, कुछ है!" नागसेशन ने एक विचित्र

सी आवाज़ में लेफ्टिनेंट मेहरा से कहा। "ग्रीन २१!"

लेफ्टिनेंट मेहरा ने अपने दायीं ओर देखा, और कमांडर विल्सन को सूचित किया। कमांडर विल्सन ने निर्देश दिए, "कोर्स बदलो, स्टारबोर्ड २१ की ओर।"

"स्टारबोर्ड २१", लेफ्टिनेंट मेहरा ने कहा।

"स्टारबोर्ड २१ की ओर घुमा दिया", जहाज़ के चालक ने कहा।

"चलते रहो", लेफ्टिनेंट मेहरा ने कहा।

3

बंगाल अपने रास्ते पर चीता की भाँति लपकी। जहाज़ समुद्र के पानी को काटती हुई, तेज़ी से आगे बढ़

रही थी। कुछ ही देर में वह एक ऐसी जगह पर पहुंची जहाँ सभी को सागर पर तैरती तेल की एक परत दिखाई पड़ी। लेफ्टिनेंट मेहरा का डर सही साबित होता दिख रहा था।

"ओह! लुटेरे!" लेफ्टिनेंट मेहरा ने कहा।

ओंडिना की सुरक्षा के लिए बंगाल घूम कर उसके साथ–साथ चलने लगी। ओंडिना को टेढ़ा–मेढ़ा होकर चलने का आदेश दिया गया। टेढ़ा–मेढ़ा चलकर जहाज़ को पनडुब्बियों से बचाया जा सकता है।

कप्तान बेंजोहरसन ने पूछा , "पर वह क्या था?"

बंगाल से संदेश आया, "बस आदेश का पालन करो!"

कप्तान बेंजोहरसन को थोड़ी आपत्ति ज़रूर हुई, पर उन्होनें आदेश का पालन किया। और जहाज़ को वैसे ही चलाने के निर्देश दिए।

और ऐसे ही अगले दिन का सूर्योदय हो गया। यह ६ नवम्बर की तारीख़ थी। ओंडिना के सभी अफ़सर बंगाल की दृढ़ता को देख रहे थे। वह छोटा सा जहाज़ केवल छोटी बंदूकों को रख सकता था। उसके डेक पर दोनों ओर बंदूकें थी जो युद्ध के हिसाब से केवल किसी खिलौने जैसी लग रही थी। बंगाल इतनी छोटी थी की जो समुद्री लहरें ओंडिना के लिए तिनके की तरह थीं, वह बंगाल को ऐसे उछाल रही थीं, जैसे समुद्र में पड़ा नारियल हो। लहरों को देख कर लग रहा था जैसे वह बंगाल को लील जाएँगी।

कप्तान बेंजोहरसन का आत्म–विश्वास तभी कमज़ोर हो गया था, जब न्यूट्सन ने उन्हें बंगाल के बारे में बताया था। पर जब उन्होनें बंगाल को सुबह के उजाले में देखा तो वे आवाक रह गए। वह मुड़े, और अपने बगल खड़े अफ़सर को देख कर हाथ हवा में उठाते हुए बोले, "ईश्वर हमारी रक्षा करे!" बंगाल के अफसरों ने उनकी बात पर कोई ध्यान नहीं दिया।

कमांडर विल्सन जहाज़ पर खड़े किसी भी खतरे का सामना करने के लिए तैयार थे। बाकी के सभी अफ़सर और जहाज़ कर्मचारी अपने–अपने कामों में लगे हुए थे। सर्जन लेफ्टिनेंट मेनन और इंजीनियर लेफ्टिनेंट हसन रेलिंग के सहारे खड़े गहरी चर्चा कर रहे थे। बंदूकों को संभालने वाले लेफ्टिनेंट रणबीर रोज़ की तरह अपनी टीम के साथ ड्रिल कर रहे थे।

जो ड्यूटी पर नहीं थे, वह भी आराम नहीं कर पा रहे थे। कोई अपनी कपड़ों में सिलाई कर रहा था, तो कोई चिट्ठियां लिख रहा था।

4

पहरा देने वाले सैनिक जहाज़ के मस्तूल पर चढ़ कर निगरानी कर रहे थे। रेडियो संभाल रहे अफ़सर ईयरफ़ोन लगाकर स्क्रीन देख रहे थे। कुछ अफ़सर टेलिस्कोप के सहारे आकाश में विमानों पर नज़र रख रहे थे। और कण्ट्रोल रूम के बगल के केबिन में एक अफ़सर वायरलेस को इस तरह से सुन रहा था जैसे अपनी दोस्तों से कहानी सुन रहा हो।

कमांडर विल्सन को छोड़ कर बंगाल के सभी लोग भारतीय थे। अलग–अलग समुदाय और जगहों से थे। पर वह सभी अपने कर्त्तव्य के प्रति निष्ठा से बंधे हुए थे। सभी महीनों तक साथ रहते थे और एक परिवार की तरह रहते थे।

ओंडिना के सभी लोग बंगाल के कर्मचारियों के बीच के सामंजस्य को देख रहे थे और सोच रहे थे की वे किस हद तक बंगाल पर निर्भर रह सकते हैं।

६ और १० नवम्बर बिना किसी घटना के बीत गए। इसी वजह से सभी सुरक्षित महसूस करने लगे थे। इस सुरक्षा का अहसास ११ नवम्बर की शाम तक उन्हें रहा। ओंडिना पर अब लोग थोड़ा आराम महसूस करने लग गए थे। जिस तरह से पिछले ३ दिन बीते थे, सब को यह लगने लगा था की दुश्मन कहीं आस–पास नहीं है।

अचानक, एक दबे हुए धमाके की आवाज़ से आस–पास के वातावरण की शान्ति भंग हो गयी। एक रोशनी की लकीर आसमान की ओर बढ़ती जा रही थी, और उसकी चिंगारियाँ समुद्र पर गिर रही थीं। इससे कप्तान बेंजोहरसन तुरंत चौकन्ने हो गए और बंगाल को किसी गिद्ध की सी नज़र से देखने लगे।

४ :४० मिनट पर, बंगाल को अमरीकी जहाज़, टोलेडो से आस–पास दो जापानी जहाज़ों के होने की खबर मिली। अगले ही क्षण बंगाल में संदेश गूँज उठा, "एक्शन स्टेशन्स।" और सभी लोग अपने–अपने स्थानों पर पहुँच गए। तोप सँभालने वाले अफ़सर, लेफ्टिनेंट रणबीर, ने प्रख्यात तोपचियों धीर सिंह, बापू करमाकर और नेलुंदर पिल्लई को मुख्य तोपों पर तैनात कर दिया। राडार के द्वारा भी पहरेदार अब नज़र रख रहे थे और पहरा दोगुना हो गया था। निर्देश मिलने के बाद सभी निकर और ऐसे कपड़ों में आ गए जो ज़ख़्मी होने पर इन्फेक्शन से बचाये और लड़ाई में बाधा ना बने। सर्जन लेफ्टिनेंट मेनन ने सबको सल्फा ज़रूरी डोज़ दे दिया ताकि घाव में सेप्सिस ना हो।

५ बजने तक सबने खाना खा लिया था और सभी सन्नाटे में बैठ कर होने वाली घटना की प्रतीक्षा कर रहे थे।

ठीक ५ बजे बंगाल के रेडियो अफ़सर ने एक संदेश पकड़ा जो कोड में था और उनकी समझ में नहीं आया। उसका कोड अंग्रेज़ों के कोड से अलग था तो उन्होनें मान लिया की कम से कम दुश्मनों के २ जहाज़ आस–पास हैं।

७ :३५ मिनट पर भी इतना उजाला था, की फ्लेयर चलाने से दुश्मन का ध्यान आकर्षित हो जाता। एल्डिस लालटेन की रोशनी उजाले में भी नज़र आती है। कमांडर विल्सन ने डिप्टी लेफ्टिनेंट को आदेश दिए की पीछे जा कर ओंडिना को संदेश दे दो। कप्तान बेंजोहरसन ने फ्लेयर देखे और आदेश

जारी किया, "एक्शन स्टेशन।"

उनकी कर्कश आवाज़ केवल उनके जहाज़ ही नहीं, बल्कि बंगाल पर भी सुनाई पड़ी। ठीक इसी क्षण में इंजन कक्ष के साउंड डिटेक्टर में किसी प्रोपेलर की आवाज़ आयी। इंजीनियर लेफ्टिनेंट हसन ने कमांडर विल्सन को सूचना दी। बंगाल ने एक और फ्लेयर छोड़ कर संकेत भेजा, "हमारे पीछे आओ।"

"३० रेड," कमांडर विल्सन ने क्वार्टरमास्टर को आदेश दिया। ओंडिना बंगाल के पीछे–पीछे चलने लगी।

अगले क्षण इंजीनियर लेफ्टिनेंट हसन ने कहा, "एक नहीं दो प्रोपेलर की आवाज़ आ रही है सर। मेरे हिसाब से दुश्मन करीब है और हमारी ओर आ रहा है।"

5

कमांडर विल्सन ने हसन को धन्यवाद दिया। उन्होंने लेफ्टिनेंट मेहरा और लेफ्टिनेंट हीफ को चार्टरुम में चर्चा के लिए बुलाया। एक ६२० टन के जहाज़ के लिए दो हथियारों से लैस, और दस गुना बड़ी, बीस गुना अधिक हथियारों से लदे जहाज़ों से लड़ना आत्महत्या करने जैसा था। लेकिन कमांडर और उनके आदमी पूरी तरह से अंतिम सांस तक लड़ने को तैयार थे।

चर्चा बस कुछ ही मिनट तक चली। सिग्नल अफ़सर सखपाल को कमांडर विल्सन ने एक संदेश भेजने के लिए बोला और सखपाल ने संदेश क्वार्टरडेक

से ओंडिना को भेज दिया।

"कमांडर विल्सन का कप्तान बेंजोहरसन को सैल्यूट। यहाँ से चले जाइये। अपनी सर्वश्रेष्ठ गति से पूर्व की ओर जाइये। बंगाल दुश्मन को उलझा कर रखेगी। अगर हम हार जाते हैं या जहाज़ को कोई नुकसान हो जाएगा तो हम वायरलेस से सूचना दे देंगे। जितनी दूर हो सके आप ओंडिना को सुरक्षा के लिए ले जाइये। अलविदा। और किस्मत आपके साथ हो। संदेश मिलने पर सूचित करें।"

ओंडिना पर संदेशवाहक अपनी टॉर्च के साथ तैयार खड़ा था। पर कप्तान बेंजोहरसन ने उसके हाथ से टॉर्च छीन ली और वापस संदेश भेजा, "डॉट, डॉट, डॉट, डॉट, डॉट, संदेश समझ में नहीं आया।"

सखपाल ने और भी तेज़ रोशनी टॉर्च उठायी और पूरा संदेश पुनः भेज दिया। पर ओंडिना को संदेश समझ में नहीं आया। सखपाल ने संदेश फिर से दोहराया। इस बार धीरे–धीरे और अधिक ध्यान से। पर कप्तान बेंजोहरसन ने फिर से जवाब दिया की संदेश समझ में नहीं आया।

सखपाल को अचम्भा हुआ। पर लेफ्टिनेंट मेहरा ज़ोर से हंसे और फिर कहा, "विजय तुम्हारी होगी, बहादुर सिपाही! साथ मिलकर हम दुश्मन को मिट्टी में देंगे!" वे समझ गए थे की ओंडिना लड़ना चाहती है।

लेफ्टिनेंट मेहरा ने यह सूचना कमांडर को दी। "सर, ओंडिना वापस नहीं भागना चाहती है। कप्तान बेंजोहरसन का कहना है की संदेश समझ में नहीं आ रहा है।"

कमांडर विल्सन ने खुद ही टॉर्च उठायी और कप्तान बेंजोहरसन को संकेत किया, "ब्रावो! गति को घटा कर ७ केबल की दूरी पर खड़े रहो।"

ओंडिना ने आदेश का पालन तुरंत किया। लेफ्टिनेंट मेहरा को फिर हंसी आयी। वह बोले, यह संदेश उन्हें दिखा भी और समझ में भी आ गया!" कमांडर विल्सन मुस्कुराये और बोले, "नेल्सन टच, क्या!"

११:१२ मिनट पर रडार स्क्रीन पर कुछ गतिविधि दिखाई पड़ी। "दुश्मन जहाज़ हमारा रास्ता रोक रहे हैं, सर," लेफ्टिनेंट मेहरा ने बताया। अब स्क्रीन पर साफ़ तौर पर दिख रहा था। लेफ्टिनेंट मेहरा ने दो मिनट देखा और एक तेज़ सीटी बजायी। डेक की ओर भागते हुए उन्होंने सैल्यूट मारा और कहा,

हथियारों से लैस दो जापानी जहाज़ हमारी ओर आ रहे हैं। वह हमसे बस ८ केबल की दूरी पर हैं।"

6

"क्या तुम उन्हें पहचान सकते हो?"

"जी सर, यह होकोकू मारू और कियोसुमी मारू हैं।"कमांडर विल्सन बोलते हुए सोचने लगे, होकोकू मारू.....१०,००० टन और कियोसुमी मारू..... ८,५०० टन?"

"और सर," लेफ्टिनेंट मेहरा फिर बोले, "दोनों पर ही ६ इंच की आठ – आठ बंदूकें लगी हैं। उनमें से एक बन्दूक का वार भी बंगाल को लग गया, तो."

"लेकिन बन्दूक होना एक बात है, और अच्छा निशाना अलग बात है, तो

देखते हैं की किसकी किस्मत ज़्यादा तेज़ है!"

उसी समय एक चकाचौंध कर देने वाली रोशनी के साथ एक तेज़ धमाका हुआ। दुश्मन ने हमला कर दिया था।

"सही किया तुमने!" लेफ्टिनेंट मेहरा बुदबुदाए। "तुम बस ऐसे ही करते रहो!" उन्होंने हमले की दिशा जानने के लिए अपनी दूरबीन हटाई। दुश्मन के जहाज़ अब भी बंगाल बंदूकों की पहुँच से दूर थे, तो बंगाल आगे बढ़ती रही।

दोनों दुश्मन जहाज़ों ने बंगाल और ओंडिना पर एक साथ हमला बोल दिया। ओंडिना ने पहला जवाबी हमला किया। बंगाल टेढ़े–मेढ़े तरीके से चलते हुए दुश्मन को अपनी पहुँच में लाने के लिए बढ़ती रही। उसकी गति तब तक बढ़ती रही जब तक उन्हें यह नहीं लगा की जहाज़ फट जाएगा। बंगाल तेज़ी से पानी में बढ़ती हुयी किसी तोप के लग रही थी।

धीर सिंह, करमाकर और पिल्लई बंदूकों की दूरबीन में ऐसे देख रहे थे जैसे कोई फोटोग्राफर फोटो खींचने तक कैमरा में देखता रहता है।

जैसे ही बंगाल दुश्मन के करीब आयी, उसकी १२ पौंड की एक बन्दूक और बाकी दोनों बंदूकों ने धावा बोल दिया, जिससे होकोकू मारू के आफ्टरडेक को सीधी चोट पहुंची।

और लेफ्टिनेंट रणबीर ने अपने सैनिकों का उत्साह वर्धन करते हुए कहा, "शाबाश! साथियों, छक्के छुड़ा दो!" और अगले ही गोले से होकोकू मारू का आफ्टरमास्ट भी ध्वस्त हो गया।

कमांडर विल्सन ने आवाज़ लगायी, "पूरी तेज़ी से आगे बढ़ो!" टेलीग्राफ पर संदेश आगे बढ़ाते हुए नागसेशन ने कहा, "पूरी गति से बढ़ रहे हैं, सर!"

कमांडर विल्सन ने फिर एक आदेश दिया, "जहाज़ को स्थिर करो!"

गीगा ने जहाज़ को स्थिर कर दिया। अगले ही पल, बंगाल दोनों दुश्मन जहाज़ों के बीच में आ गयी। और दोनों जहाज़ों उन्होनें एक साथ हमला कर दिया।

कप्तान बेंजोहरसन बंगाल की यह हरकत देख कर चकित हो गए। वह बोले, "मूर्ख!"

पर ऐसा करके बंगाल ने जापानी जहाज़ों को मुश्किल में डाल दिया। अगर उनमें से किसी ने भी बंगाल पर हमला किया तो उसके साथी जहाज़ को भी नुकसान पहुँचता। इस बंगाल की इस अप्रत्याशित नीति से दुश्मन जहाज़ों के तोपची चकित हो गए थे। और कप्तान हैरानी के कारण कोई भी निर्देश नहीं पा रहे थे। इसी क्षण में बंगाल ने दोनों पर एक साथ घातक हमले कर दिए।

कियोसुमी मारू इस झटके से पहले बाहर आयी। उसका पिछला भाग घूमा, और उसकी नीति को समझकर होकोकू मारू बढ़ना शुरू किया।

चूँकि, जापानी जहाज़ों का सारा ध्यान बंगाल ने अपनी ओर आकर्षित कर लिया था, तो वे ओंडिना को थोड़े समय के लिए भूल गए थे। पर जब कियोसुमी मारू का एक प्रोपेलर ओंडिना के हमले से टुकड़े–टुकड़े हो गया, तो उसके कप्तान को अहसास हुआ की ओंडिना भी करीब है। अब उसने बंगाल से ध्यान हटाकर ओंडिना पर हमला शुरू कर दिया।

बंगाल ने घूम कर कियोसुमी मारू का पीछा किया और बौछार कर दी जिससे कियोसुमी मारू का रडर यानि की उसको घुमाने वाली पतवार को ध्वस्त कर दिया। जवाब में कियोसुमी मारू ने ओंडिना पर गोलियों की बौछार कर उसमें आग लगा दी। उस पर रखे पेट्रोल और तेल ड्रमों ने आग पकड़ ली और रात के अँधेरे में आग की लपटें किसी भयानक दानव की तरह लग रही थीं।

बंगाल ने ओंडिना को वायरलेस के द्वारा कोड में संदेश भेजा, "यहाँ से निकल जाओ। तुम्हारी मंज़िल डिएगो गार्सिया है, देशांतर ७५ डिग्री पूर्व, अक्षांश ६ डिग्री दक्षिण। गुड लक।"

7

ओंडिना जल रही थी और वह घूमी। कप्तान बेंजोहरसन ने रेडियो अफ़सर को नौसेना मुख्यालय को संदेश भेजने का आदेश दिया। जहाज़ की पहचान हो जाने के बाद रेडियो अफ़सर ने संदेश कहा, "मेरी जहाज़ पर ७००० टन तेल और पेट्रोल है। दो जापानी जहाज़ों से लड़ाई में मेरी जहाज़ में आग आग लग गयी है। जहाज़ को बचाने की कोशिश में लगा हुआ हूँ। भारतीय नौसेना के जांबाज़ों से भरी आर आई एन एस बंगाल अकेले दो बड़े जहाज़ों से लोहा ले रही है। हमारी पोजीशन देशांतर ७२ डिग्री, ४० मिनट पूर्व, अक्षांश १६ डिग्री ४५ मिनट दक्षिण है।"

चूँकि ओंडिना बचाव के लिए पीछे हटने की कोशिश कर रही थी, तो बंगाल ने एक और बार दुश्मनों को उलझाने की कोशिश की। बंगाल को काफी नुकसान पहुंचा था। जगह–जगह से वह टूट गयी थी। बंगाल पर कई सैनिक चोटिल अवस्था में स्ट्रेचर पर अपनी बारी का इंतज़ार कर रहे थे। उन्हें देख कर बाकी के सैनिकों में कुर्बान हो जाने के जज़्बे ने जन्म ले लिया।

लेफ्टिनेंट मेहरा कमांडर विल्सन की ओर घूमे और बोले, "सर, आप व्यापारी नाव के भी कप्तान रहे हैं। दोनों ही जापानी जहाज़ व्यापारी जहाज़ हैं। अगर आप उनके कप्तान होते तो अपनी गोलियों की मैगज़ीन कहाँ पर रखते?"

कमांडर विल्सन लेफ्टिनेंट मेहरा के प्रश्न से चकित रह गए। फिर उनके कंधे पर हाथ रख कर बोले, "बहुत खूब! यह ख्याल मुझे क्यों नहीं आया? खैर। अगर मैं होकोकू मारू का कप्तान होता, तो गोलियों की मैगज़ीन को इंजन कक्ष से दूर नम्बर ५ कक्ष में रखता!" लेफ्टिनेंट मेहरा समझ गए, और बोले, "धन्यवाद सर, नम्बर ५ कक्ष पर निशाना लगेगा!" लेफ्टिनेंट मेहरा, लेफ्टिनेंट रणबीर को खोजने निकल गए।

कमांडर विल्सन की नज़र उनकी घड़ी पर गयी। युद्ध शुरू हुए केवल बीस मिनट ही हुए थे! वह एकटक घड़ी को देखते हुए बोले, "२० ग्रीन!"

गीगा ने फिर संदेश आगे बढ़ाया। "२० ग्रीन।" टेलीग्राफ पर संदेश आगे गया, आधा आगे स्टारबोर्ड, पूरा आगे पोर्ट।

इसका मतलब था, की बंगाल आधा दाहिने ओर घूमेगी, फिर पूरी तरह से बायीं ओर।

बंगाल मुड़ने लगी।

होकोकू मारू के कप्तान ने बंगाल को अपनी ओर घूमते देख कर सभी बंदूकें उसकी ओर घुमा दीं। और चुटकी बजाते हुए अपने लोगों से कहा, "जैसे ही वह करीब आये, उसको उड़ा दो!"

बंगाल ने अपनी अगला हिस्सा होकोकू मारू के एक ओर रखा जहाँ सभी बंदूकें तैनात थीं। इससे होकोकू मारू के लोगों को बंगाल पर निशाना साधने में मुश्किल हो रही थी। इसके लिए होकोकू मारू बंगाल के बराबर में आने के लिए घूमी। उसके घुमते ही, बंगाल ने अपने छोटे कद को झुठलाते हुए होकोकू मारू पर ऐसा घातक वार किया की होकोकू मारू उलट गयी।

गोलियों से भरे उनके नम्बर ५ कक्ष में आग लग चुकी थी।

नेलुंदर पिल्लई की पीठ थपथपाते हुए लेफ्टिनेंट रणबीर ने कहा, "शाबाश पिल्लई!" बंगाल पर मौजूद सभी सैनिको में उत्साह का संचार हो गया था। पर तभी कमांडर विल्सन ने देखा की कियोसुमी मारू अभी भी ओंडिना को ध्वस्त करने पर तुली हुई है। और उसके लगातार वारों से जहाज़ को बहुत नुक्सान हो चूका था और कप्तान बेंजोहरसन की मृत्यु हो चुकी थी।

ओंडिना अब जलते हुए स्टील के बड़े डिब्बे की तरह लग रही थी। ज़िंदा बचे सभी अफसरों और कर्मियों ने जहाज़ छोड़ने के निर्णय लिया और जहाज़ से लाइफबोट उतारने लगे।

कियोसुमी मारू ने ओंडिना को डुबोने की जैसे प्रतिज्ञा कर ली थी। उसने दो टॉरपीडो छोड़े, जो निशाने पर नहीं लगे। इससे बौखलाकर जापानियों ने अपनी मशीन गनों को निहत्थे सैनिकों और कर्मचारियों पर तान दिया।

पर उसी समय एक धमाका सुनाई पड़ा जो होकोकू मारू की आखिरी चीख थी। कियोसुमी मारू उसके कर्मियों को बचाने के लिए बढ़ी, पर समय बहुत कम था और लाइफबोट उतरने का मौका भी नहीं मिला।

और अब बंगाल किसी ज़ख़्मी शेरनी की तरह उसकी ओर बढ़ रही थी। इससे घबराकर कियोसुमी मारू उत्तर–पूर्व की ओर भागी। पर जाते–जाते उसने ओंडिना की ओर एक और टॉरपीडो छोड़ा।

8

लेकिन वह फिर निशाना चूक गयी।

अब बंगाल ने अपना ध्यान ओंडिना की ओर किया। कमांडर विल्सन और उनके आदमी ओंडिना को बचाने के लिए प्रतिबद्ध थे।

अपने ओर बंगाल को आते हुए देखकर लाइफबोट में बैठे आदमियों में हिम्मत आ गयी थी। कई घंटों की मशक्क़त के बाद उन्होने आग पर काबू पा लिया। इधर आग की अंतिम लपटें बुझीं, उधर १२ नवम्बर की भोर हुई।

इतने हमलों के बाद भी बंगाल कमज़ोर नहीं हुयी। उसके ११० में से ५०

लोग चोटिल हुए थे, पर किसी की जान नहीं गयी।

आर आई एन एस बंगाल ओंडिना को लेकर गंतव्य की ओर चल दी। उसकी बंदूकों में गोलियाँ अब भी बाकी थीं।

"सुकानी", प्रोफेसर चंद्रशंकर ए बुच का उपनाम था। "सुकानी" का अर्थ "खेवनहार" होता है। सुकानी ने अंग्रेजी व संस्कृत साहित्य में डिग्री प्राप्त की थी। लेकिन समुद्र से अपने लगाव के चलते उन्होंने समुद्री परिवहन में नौकरी करनी शुरू कर दी। उन्होंने स्वतंत्रता के बाद देश में नाविक अफसरों के प्रशिक्षण के लिए पहला स्कूल बनाया।

सुकानी ने समुद्र पर कई कहानियाँ लिखी हैं। इनमें से कई असल जीवन से ली गयी हैं। उनके द्वारा लिखी हुई प्रसिद्ध लम्बी लघु कथा, "दुधकियो बान," ज्वार–भाटा पर आधारित है। १९५८ में बासठ वर्ष की आयु में उनका देहांत हो गया।

क कथा

कथा एक विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त गैर–लाभकारी संस्था है जो कि शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में सन् 1988 से काम कर रही है। गरीबी में रहने वाले बच्चों की शिक्षा को बढ़ावा देने का व उनके लिए विशेष किताबें बनाने का कथा के पास लगभग 30 साल का अनुभव है।

"भारत के मुकुट पर एक शैक्षिक हीरा!" **– नाओकी शिनोहरा, उपप्रबंध निर्देशक, आईएमएफ**

"कथा का काम इस विचार से प्रेरित है कि बच्चे अपने समुदायों में स्थायी बदलाव ला सकते हैं। जैसे कि बच्चे करते हैं (कथा की किताबों में)।" **– पेपरटाइगर्स**

"कथा बच्चों के लिए नर्म दिल है। तभी तो कथा बच्चों के लिए इतनी खूबसूरत किताबें बनाती है।" **– टाइम आउट**

"कथा दुनिया भर में उन रचनात्मक संगठनों के लिए एक उदाहरण है जो शहरों के सुधार के लिए काम करते हैं।"

– चार्ल्स लैंड्री, ***द आर्ट ऑफ़ सिटी मेकिंग***

हिंदी संस्करण 2021

कृति स्वामित्व © कथा, 2021
मौलिक लेखन कृति स्वामित्व © गीता धर्मराजन
कवर फोटो पेंटिंग विकीमीडिया कॉमन्स
स्वत्वाधिकार सुरक्षित। प्रकाशक की आज्ञा के बिना इस किताब के किसी भी भाग को छापना अथवा अन्य किसी पुनः प्रयोग विधि के रूप में प्रतिकृति या इस्तेमाल वर्जित है।

नयी दिल्ली द्वारा मुद्रित

हमारा लक्ष्यः हर बच्चा आनंद और अर्थवत्ता के लिए पढ़ें।

कथा एक पंजीकृत आलंभकारी संस्था है जिसकी स्थापना 1988 में किया गया था। कथा शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में काम करती है। कथा का मुख्य उद्देश्य है बच्चों और बड़ों में पढ़ने में रूचि एवं इससे मिलती खुशी को बढ़ावा देना। कथा 1,00,000 से भी अधिक बच्चों के साथ काम करती है ताकि वे मजे के लिए और कक्षा स्तर पर पढ़ सकें।

ए–3 सर्वोदय एन्क्लेव, श्री औरोबिन्दो मार्ग, नयी दिल्ली – 110017
दूरभाषः 4141 6600 - 4141 6624 - 4182 9998
इ–मेलः marketing@katha-org
वेबसाइटः www-katha-org | www-books-katha-org

इस किताब की बिक्री में मिली राशि का 10% बच्चों की शिक्षा के लिए कथा स्कूल को दिया जाएगा।
कथा नियमित रूप से उस लकड़ी के बदले पेड़ लगाती है, जिससे हमारी किताबों को छापने का कागज बनता है।

यह सभी आई.एल.आर किताबें हैं इसकी ऑरेंज शृंखला में

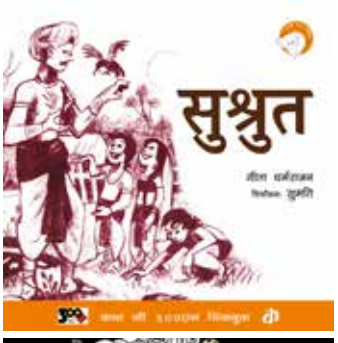

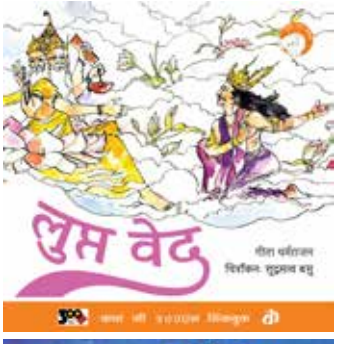

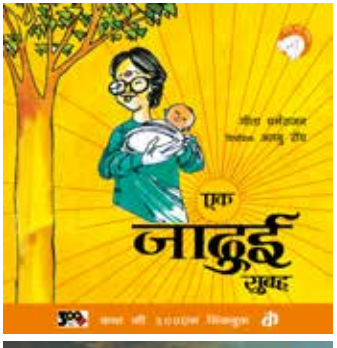

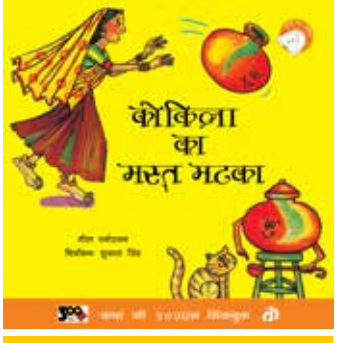

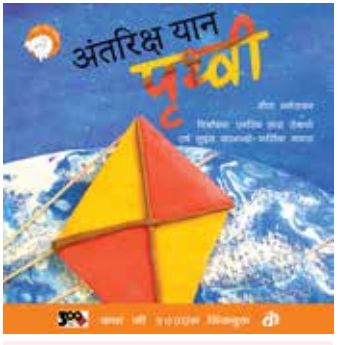

आनंद और समझने के लिए पढ़ो

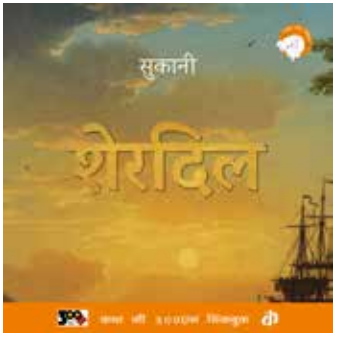

FOR OUR BOOKS

www.books.katha.org

"[Katha]...a special and unique moment in Indian Publishing history."

— The iconic The Economic Times

for children

a katha book

ISBN 978-93-88284-81-3

9 789388 284813

www.katha.org

₹ xxx